आश्रम के गाऊं गीत, सुनो तुम नर नारी ॥टेक॥
है रामसरोवर तीरथ भाई, मिट्टी खोदें लोग लुगाई ।
हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, तीरथ के सब भये सहाई ॥
है आश्रम के बीच शोभा अति भारी ॥१॥
चहुं ओर हैं तरुवर लागे, पीपल, अर्जुन, आम विराजे ।
शीशम, कदम्ब, आँवला साजे, भोर होत ही पक्षी जागे ॥
मिल गावें संगीत, उठे हैं ब्रह्मचारी ॥२॥
गुरुकुल बना यहां पर भाई, दूर दूर से कन्या आई ।
विद्या पढ़ती चित्त लगाई, देश उन्नति में होत सहाई ॥
ढ़हे अविद्या भींत, होयगा सुख भाई ॥३॥
दलितोद्धार पाठशाला है, एक समीप औषधाला है ।
इसका काम बड़ा आला है, साथ ही एक पुस्तकाला है ॥
है यह सबका मीत, पत्र 'भक्ति' जारी ॥४॥
उत्तम एक गऊशाला है, ठहरन को अतिथि शाला है ।
भक्ति प्रेस खुला आला है, भक्तों का देखा भाला है ॥
जिनकी प्रभु में प्रीति, धर्म पर बलिहारि ॥५॥
निष्काम कर्म सभी करते हैं, वृक्षों में पानी भरते हैं ।
ध्यान प्रभु का नित धरते हैं, नहीं किसी से भी डरते हैं ॥
यही जो उनकी रीति, वेद पढ़ें ब्रह्मचारी ॥६॥
शंकर काम करे है भारी, नारायण गौशाला सुधारी ।
दिलसुख गावे भजन मुरारी, भूमानन्द कहे ब्रह्मचारी ॥
करो शम्भु से प्रीति, हरै संकट भारी ॥७॥